**पाठ - 21**

# स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगनाएँ

## रानी लक्ष्मीबाई

**‘‘भारतीय इतिहास में ऐसी अनेक वीर महिलाएँ हुई हैं, जिन्होंने बहादुरी तथा साहस के साथ युद्ध भूमि में शत्रु से लोहा लिया। इनमें झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। रानी वीरता, साहस, दयालुता, अद्वितीय सौन्दर्य का अनुपम संगम थीं। दृढ़ता, आत्मविश्वास व देशभक्ति उनके हथियार थे जिससे अंग्रेजों को मात खानी पड़ी।’’**

लक्ष्मीबाई को बचपन में सब प्यार से मनु बुलाते थे। मनु की आयु चार-पाँच वर्ष की थी कि उनकी माँ का देहान्त हो गया। मनु के पिता पुणे के पेशवा बाजीराव के दरबार में थे। मनु की देख-भाल के लिए उनके पिता उन्हें अपने साथ पेशवा बाजीराव के दरबार में ले जाते थे। अतः मनु का बचपन पेशवा बाजीराव के पुत्रों के साथ बीता। मनु उन्हीं के साथ पढ़ती थी। पेशवा बाजीराव के बच्चों को अस्त्र-शस्त्र चलाने की शिक्षा दी जाती थी। उन बच्चों को देखकर मनु की भी शस्त्र-विद्या में रुचि उत्पन्न हुई। मनु ने बहुत लगन से तीर-तलवार चलाना, बंदूक चलाना और घुड़सवारी करना सीखा। घुड़सवारी, तीर-तलवार चलाना मनु के प्रिय खेल थे। वे इसमें इतनी निपुण हो गईं कि लोग इस नन्हीं बाला को देखकर आश्चर्य करते थे। वे स्वभाव से बहुत चंचल थीं इसी कारण सब प्यार से उन्हें ‘छबीली’ भी कहते थे। मनु का साहस और कौशल देखकर बाजीराव के पुत्र राना घोंडू पंत और तात्या टोपे भी आश्चर्य चकित रह जाते। मनु का विवाह झाँसी के महाराजा गंगाधर राव के साथ हुआ। विवाह के बाद उन्हें नाम दिया गया-रानी लक्ष्मीबाई। रानी लक्ष्मीबाई ने किले के अंदर ही व्यायामशाला बनवायी और शस्त्र चलाने तथा घोड़े की सवारी का अभ्यास करने की व्यवस्था की। घोड़ों की पहचान में वे बहुत निपुण मानी जाती थीं।

(जन्म - सन 1835, म्रित्यु- सन 1858)

**एक बार रानी के पास एक सौदागर घोड़े बेचने आया। उन घोड़ों में दो घोड़े एक जैसे दिखते थे। रानी ने उनमें से एक घोड़े का दाम एक हजार रुपये तथा दूसरे का दाम पचास रुपये लगाया। सौदागर ने कहा-"महारानी दोनों घोड़े एक जैसे हैं फिर यह फर्क क्यों?" रानी ने उत्तर दिया "एक घोड़ा उन्नत किस्म का है जबकि दूसरे की छाती में चोट है।**

रानी लक्ष्मीबाई नारी में अबला नहीं सबला का रूप देखती थीं। उन्होंने स्त्री सेना का गठन किया जिसमें एक से बढ़कर एक वीर साहसी स्त्रियाँ थीं। रानी ने उन्हें घुड़सवारी व शस्त्र चलाने का प्रशिक्षण दिलाकर युद्ध कला में निपुण बनाया।

रानी के जीवन में बहुत से उतार-चढ़ाव आए। रानी को एक पुत्र उत्पन्न हुआ, परंतु यह आनन्द अल्पकाल तक ही रहा। कुछ महीने बाद ही शिशु की मृत्यु हो गई। जब राजा गंगाधर राव गंभीर रूप से बीमार हुए तो दुर्भाग्य के बादल और भी घने हो गए। उनके जीवित बचने की कोई आशा नहीं थी। दरबार के लोगों की सलाह पर उन्होंने अपने परिवार के पाँच वर्षीय बालक को गोद लेकर दत्तक पुत्र बना लिया। बालक का नाम दामोदर राव रखा गया। बालक को गोद लेने के दूसरे दिन ही राजा की मृत्यु हो गई। रानी पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा। इस विपत्ति के समय झाँसी राज्य को कमजोर जानकर अंग्रेजों ने अपनी कूटनीतिक चाल चली।

अंग्रेजों ने रानी को पत्र लिखा कि राजा के कोई पुत्र न होने के कारण झाँसी पर अब अंग्रेजों का अधिकार होगा। इस सूचना पर रानी तिलमिला उठीं। उन्होंने घोषणा की कि झाँसी का स्वतंत्र अस्तित्व है। स्वामिभक्त प्रजा ने भी उनके स्वर में स्वर मिला कर कहा हम अपनी झाँसी नहीं देंगे। अंग्रेजों ने झाँसी पर चढ़ाई कर दी। रानी ने भी युद्ध की पूरी तैयारी की। उन्होंने किले की दीवारों पर तोपें लगा दीं। रानी की कुशल रणनीति और किलेबन्दी देखकर अंग्रेजों ने दाँतों तले अँगुलियाँ दबा लीं। अंग्रेज सेना ने किले पर चारों ओर से

आक्रमण कर दिया। आठ दिन तक घमासान युद्ध हुआ। रानी ने अपने महल के सोने व चाँदी का सामान भी तोप के गोले बनाने के लिए दे दिया।

रानी ने संकल्प लिया कि अंतिम साँस तक झाँसी के किले पर फिरंगियों का झंडा नहीं फहराने देंगी। लेकिन सेना के एक सरदार ने गद्दारी की और अंग्रेजी सेना के लिए किले का दक्षिणी द्वार खोल दिया। अंग्रेजी सेना किले में घुस आयी। झाँसी के वीर सैनिकों ने अपनी रानी के नेतृत्व में दृढ़ता से शत्रु का सामना किया। शत्रु की सेना ने झाँसी की सेना को घेर लिया। किले के मुख्यद्वार के रक्षक सरदार खुदाबख्श और तोपखाने के अधिकारी सरदार गुलाम गौस खाँ वीरतापूर्वक लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। ऐसे समय में रानी को उनके विश्वासपात्र सरदारों ने कालपी जाने की सलाह दी। रानी अपनी सेना को छोड़कर नहीं जाना चाहती थीं। लेकिन उनके सेनानियों ने उनसे अनुरोध करते हुए कहा ‘‘महारानी, आप हमारी शक्ति हैं। आपका जीवित रहना हमारे लिए बहुत जरूरी है। यदि आपको कुछ हो गया तो अंग्रेज सेना झाँसी पर अधिकार कर लेगी।’’ समय की गम्भीरता को देखते हुए, अपने राज्य की भलाई के लिए रानी झाँसी छोड़ने के लिए राजी हो गईं। उन्हें वहाँ से सुरक्षित निकालने के लिए एक योजना बनाई गईं इस योजना में झलकारी बाई ने प्रमुख भूमिका निभाई थी।

## झलकारी बाई

झलकारी बाई रानी की स्त्री सेना में सैनिक थीं। वह रानी की अंतरंग सखी होने के साथ-साथ रानी की हमशक्ल भी थीं। अपने प्राणों की परवाह किए बगैर जिस प्रकार उसने रानी की रक्षा की यह अपने में एक अद्भुत कहानी है। वह रानी के एक सेना नायक पूरन कोरी की पत्नी थीं। रानी उनकी बुद्धिमत्ता एवं कार्यक्षमता से इतनी प्रभावित हुईं कि उन्होंने झलकारी बाई को शस्त्र संचालन तथा घुड़सवारी का प्रशिक्षण दिलाकर उन्हंे सैन्य संचालन में दक्ष कर दिया। झलकारी बाई रानी के प्रति पूर्णतः समर्पित थीं। उनमें देश-प्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी थी। जब रानी को किले से सुरक्षित निकालने की योजना बनाई गई तो झलकारी बाई ने रानी के वेश में युद्ध करने के लिए स्वयं को प्रस्तुत किया। रंग-रूप में रानी से समानता होने के कारण अंग्रेजों को भ्रमित करना आसान था। वे रानी की पोशाक पहन कर युद्ध करती हुई बाहर आ गईं। उनके रण कौशल व रंगरूप को देखकर अंग्रेज भ्रम में पड़ गए। उन्होंने वीरतापूर्वक अंग्रेजों का सामना किया और उन्हें युद्ध में उलझाए रहीं। इसी बीच रानी को बच निकलने का मौका मिल गया। दुर्भाग्य से एक गद्दार ने उन्हें पहचान लिया और अंग्रेज अधिकारी को सच्चाई बता दी। वास्तविकता जानकर अंग्रेज सैनिक रानी का पीछा करने निकल पड़े ।

**झलकारी बाई की सच्चाई जानकर एक अंग्रेज स्टुअर्ट बोला-"क्या यह लड़की पागल हो गयी है?" एक दूसरे अधिकारी ह्यूरोज ने सिर हिला कर कहा -"नहीं स्टुअर्ट, यदि भारत की एक प्रतिशत स्त्रियाँ भी इस लड़की की तरह देश-प्रेम में पागल हो जाएँ तो हमें अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति सहित यह देश छोड़ना होगा।**''

जनरल ह्यूरोज ने झलकारी बाई को बंदी बना लिया परंतु एक सप्ताह बाद छोड़ दिया। अपनी मातृभूमि एवं महारानी लक्ष्मीबाई की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाने वाली झलकारी बाई शौर्य एवं वीरता के कारण देशवासियों के लिए आदर्श बन गईं।

**अपना यश, कीर्ति लिए,**

**जब आहुति देती है नारी**

**तब-तब पैदा होती है**

**इस धरती पर झलकारी।।**

उधर झाँसी छोड़ने के बाद रानी अपने कुछ सैनिकों के साथ अपना घोड़ा कालपी की तरफ दौड़ा रही थीं। पीछा करते सैनिकों ने रानी को देखते ही उन पर गोलियाँ दागनी शुरू कर दीं। एक गोली रानी की जाँघ में जा लगी। उनकी गति-मंद पड़ते ही अंग्रेज सैनिकों ने उन्हें घेर लिया। दोनों दलों में भयंकर संघर्ष हुआ। रानी घायल और थकी हुई थीं, परंतु उनकी वीरता और साहस में कोई कमी नहीं आयी थी। रानी को विवशतावश युद्ध क्षेत्र छोड़ना पड़ा था। परंतु हर पल उन्हें अपने साथियों और सैनिकों की सुरक्षा की चिन्ता थी। इस संघर्ष के दौरान एक अंग्रेज घुड़सवार ने रानी की सखी व सैनिक मुन्दर पर हमलाकर उसे मार दिया। यह देखकर रानी क्रोध से तमतमा उठीं उन्होंने उस घुड़सवार पर भीषण प्रहार किया और उसे मृत्यु के घाट उतार दिया।

कालपी की ओर घोड़ा दौड़ाते हुए अचानक मार्ग में एक नाला आया। नाले को पार करने के प्रयास में घोड़ा गिर गया। इस बीच अंग्रेज घुड़सवार निकट आ गए। एक अंग्रेज ने रानी के सिर पर प्रहार किया और उनके हृदय में संगीन से वार किया। गम्भीर रूप से घायल होने पर भी वे वीरतापूर्वक लड़ती रहीं। अंततः अंग्रेजों को रानी व उनके साथियों से हार मानकर मैदान छोड़ना पड़ा। घायल रानी को उनके साथी बाबा गंगादास की कुटिया में ले गए। पीड़ा के बावजूद रानी के चेहरे पर दिव्य तेज था। अत्यधिक घायल होने के कारण रानी वीरगति को प्राप्त हो गईं और क्रान्ति की यह ज्योति सदा के लिए लुप्त हो गईं

आज भी उनकी वीरता के गीत गाये जाते हैं-

**"बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,**

**खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।"**

## अभ्यास

1. मनु के बचपन के प्रिय खेल कौन-कौन से थे ?

2. अंग्रेजों ने झाँसी को किस बहाने से हथियाना चाहा ?

3. झलकारी बाई ने रानी के वेश में युद्ध करने के लिए स्वयं को क्यों प्रस्तुत किया ?

4. ''क्या यह लड़की पागल हो गयी है''-यह वाक्य अंग्रेज अधिकारी स्टुअर्ट ने क्यों कहा होगा?

5. ''रानी ने अपने महल के सोने व चाँदी का सामान भी तोप के गोले बनाने के लिए दे दिया।'' इससे रानी की किस विशेषता का पता चलता है ?

6. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

   क. छोटी उम्र में ही मनु शस्त्र चलाने में.....हो गईं।

   ख. लक्ष्मीबाई के पति का नाम .....था।

   ग. झलकारी बाई रानी की .....थी।

घ. रानी झलकारी बाई की .....से प्रभावित हुईं ।

7. नीचे लिखे विकल्पों में से सही उत्तर छाँटकर लिखिए-

**अंग्रेज युद्ध क्षेत्र में झलकारी बाई को देखकर भ्रम में पड़ गए क्योंकि-**

क. वह बहुत सुंदर थी।

ख. अंग्रेज उनका चेहरा नहीं देख सके।

ग. वह रणकौशल व रंगरूप में रानी के समान थीं।

घ. उन्होंने पहले कभी रानी को नहीं देखा था।

8. इस पाठ में रानी लक्ष्मीबाई के किन गुणों को उभारा गया है, उन्हें लिखिए।

9. पाठ में आये मुहावरों को ढूँढ़कर लिखिए।